विचार बिन्दु

घर का मोह कायरता का दूसरा नाम है। –अज्ञात

कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों का निर्बाध नियंत्रण हो तो दुनिया की कोई ताकत परीक्षा पेपर लीक नहीं करा सकती

आइये भारत में परीक्षा के संबंध में दो उदाहरण देखते हैं।

पहला, व्यापम घोटाला, जिसे मध्य प्रदेश व्यावसायिक परीक्षा मंडल (व्यापम) घोटाला के नाम से जाना जाता है। यह भारतीय इतिहास के सबसे बड़े भर्ती और प्रवेश परीक्षाओं में भ्रष्टाचार के मामलों में से एक है। इस घोटाले में राजनीतिक, नौकरशाही और शैक्षिक तंत्र की मिलीभगत से मेडिकल प्रवेश, भर्ती परीक्षाओं और अन्य शैक्षिणक परीक्षाओं में बड़े पैमाने पर अनियमितताएं की गईं। फर्जी उम्मीदवारों को परीक्षा में बैठाने, पेपर लीक करने और रिश्वत लेकर चयनित करने जैसी गतिविधियों ने इस घोटाले को उजागर किया। इसकी जांच के दौरान कई संदिग्ध मौतें भी हुईं, जिसने इस घोटाले की गंभीरता को और बढ़ा दिया। इस घटना ने न केवल मध्य प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता को ठेस पहुंचाई, बल्कि पूरे देश में शिक्षा और भर्ती प्रणाली की पारदर्शिता पर भी सवाल खड़े किए। अनेक सवाल आज भी अनुत्तिरत हैं।

दूसरा, संघ लोक सेवा आयोग भारत की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षाओं का आयोजन करता है, जिनमें सिविल सेवा परीक्षा, भारतीय वन सेवा परीक्षा, और विभिन्न अन्य केंद्रीय सेवाओं की परीक्षाएं शामिल हैं। संघ लोक सेवा आयोग अपनी सख्त और पारदर्शी परीक्षा प्रणाली के लिए जाना जाता है, जिसके कारण इसके पेपर कभी लीक नहीं होते। संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा प्रक्रिया में कड़े सुरक्षा प्रबंध, गोपनीयता बनाए रखने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग और उत्तरदायी, ईमानदार एवं कर्तव्यनिष्ठ अधिकारियों की नियुक्ति शामिल होती है। इन सबके प्रयास से संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाएं निष्पक्ष और विश्वसनीय बनी हुई हैं, जिससे देश भर में इसकी प्रतिष्ठा बनी हुई है और यह एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करती है कि कैसे एक सशक्त परीक्षा प्रणाली संचालित की जा सकती है।

दोनों ही उदाहरण भारत के हैं। व्यापम घोटाला और संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के मामलों की तुलना में साफ़ अंतर दिखता है। व्यापम घोटाला मध्य प्रदेश में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार और अनियमितताओं का कथित प्रतीक है, जिसमें फर्जी उम्मीदवारों, पेपर लीक और रिश्वत के माध्यम से प्रवेश और भर्ती में हेराफेरी किये जाने की जानकारी सामने आई और जो भी गवाह थे सब एक–एक कर दुनिया से चले गए। इसके विपरीत, संघ लोक सेवा आयोग अपनी सख्त और पारदर्शी परीक्षा प्रणाली के लिए जाना जाता है, जिसमें गोपनीयता और सुरक्षा के कड़े प्रबंध होते हैं। संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में अब तक पेपर लीक जैसी घटनाएँ प्राय: नहीं हुई हैं, जो इसकी विश्वसनीयता और निष्पक्षता को साबित करती हैं। इस प्रकार, जहां व्यापम घोटाला शिक्षा प्रणाली की विफलता का उदाहरण है, वहीं संघ लोक सेवा आयोग उत्कृष्ट परीक्षा प्रबंधन का एक आदर्श मॉडल प्रस्तुत करता है।

यहाँ एक बात साफ़ है कि संस्थाओं में ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठऔर संविधान–निष्ठव्यक्तियों का नियंत्रण हो तो दुनिया की कोई ताकत परीक्षा का पेपर लीक नहीं करा सकती। एक गहरा संदेश यह है कि हमारे शिक्षा और परीक्षा प्रणाली और उसके संचालन में सुधार की आवश्यकता को दर्शाता है। शिक्षा किसी भी देश के समाज, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण की रीढ़ होती है और परीक्षा प्रणाली उसका एक महत्वपूर्ण और अभिन्न हिस्सा होती है। परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता और पारदर्शिता बनाए रखना न केवल छात्रों के भविष्य के लिए आवश्यक है, बल्कि समाज के संपूर्ण विकास और उन्नित के लिए भी महत्वपूर्ण है।

पेपर लीक की समस्या पिछले कुछ वर्षों में एक गंभीर मुद्दा बन गई है। कई महत्वपूर्ण परीक्षाओं के पेपर लीक होने की घटनाएं सामने आई हैं, जिससे न केवल छात्रों का भविष्य दांव पर लगा है, बल्कि पूरी शिक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता पर भी सवाल उठे हैं। यह समस्या केवल एक परीक्षा की नहीं, बल्कि पूरे समाज की होती है। जब एक परीक्षा का पेपर लीक होता है, तो उसके परिणाम स्वरूप जो असमानता और अन्याय होता है, वह पूरे समाज में असंतोष और अविश्वास का कारण बनता है।

इस समस्या के समाधान के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम यह है कि परीक्षा संचालन और प्रश्नपत्र तैयार करने के कार्य में कर्तव्यनिष्ठ और जिम्मेदार व्यक्तियों को शामिल किया जाए। कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति अपने कार्य के प्रति पूरी निष्ठा और ईमानदारी से जुटे रहते हैं और किसी भी प्रकार की अनियमितता या भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं करते। उनका नैतिक आधार मजबूत होता है और वे समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को गंभीरता से समझते हैं। जब कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति परीक्षा संचालन का जिम्मा संभालते हैं, तो परीक्षा प्रक्रिया के सभी पहलुओं में पारदर्शिता और विश्वसनीयता बढ़ जाती है। ये व्यक्ति यह सुनिश्चित करते हैं कि परीक्षा प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की लापरवाही न हो। वे सभी चरणों में सख्त सुरक्षा उपायों का पालन करते हैं, जिससे पेपर लीक होने की संभावना बहुत कम हो जाती है। सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसे ठोस चरित्र वाले लोग किसी नेता, मंत्री की नाजायज सिफारिश नहीं सुनते।

> **कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों का नियंत्रण होना केवल एक नैतिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक समाजिक और राष्ट्रीय आवश्यकता भी है। यह न केवल छात्रों के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि समाज के संपूर्ण विकास और उन्नति के लिए भी आवश्यक है। जब कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति परीक्षा संचालन का जिम्मा संभालेंगे, तो दुनिया की कोई ताकत परीक्षा का पेपर लीक नहीं करा सकती।**

इस संदर्भ में, यह भी महत्वपूर्ण है कि परीक्षा संचालन के सभी चरणों में जिम्मेदारियों का स्पष्ट विभाजन किया जाए। जब जिम्मेदारियों का स्पष्ट विभाजन होता है, तो किसी भी व्यक्ति को पूरे प्रक्रिया पर पूर्ण नियंत्रण नहीं होता, जिससे किसी भी प्रकार की अनियमितता या भ्रष्टाचार की संभावना कम हो जाती है। इसके अलावा, परीक्षा संचालन के लिए एक समर्पित और कर्तव्यनिष्ठ टीम का गठन किया जाना चाहिए, जो पूरी प्रक्रिया की निगरानी करे और किसी भी प्रकार की अनियमितता को तुरंत पहचान कर उसे रोक सके। नाजायज सिफारिश करने वाले नेताओं, मंत्रियों के विरुद्ध तत्काल वैधानिक कार्यवाही कर जेल का रास्ता दिखाया जाये तो स्थिति में बड़ा सुधार होगा।

डिजिटल निगरानी प्रणाली का उपयोग भी पेपर लीक की घटनाओं को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। परीक्षा केंद्रों पर डिजिटल निगरानी प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए, जिससे किसी भी प्रकार की अनियमितता की संभावना को रोका जा सके। इससे न केवल परीक्षा केंद्रों की सुरक्षा बढ़ती है, बल्कि परीक्षा संचालन में पारदर्शिता भी बढ़ती है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, कड़ी सजा का प्रावधान भी पेपर लीक की घटनाओं को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। पेपर लीक की घटनाओं में शामिल व्यक्तियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान होना चाहिए, ताकि अन्य लोग इससे सबक लें और ऐसी घटनाओं को अंजाम देने से पहले सौ बार सोचें। यह सुनिश्चित करने के लिए एक सख्त कानून और न्यायिक प्रणाली की आवश्यकता है, जो ऐसे मामलों में त्वरित और प्रभावी न्याय प्रदान कर सके। इसके अलावा, शिक्षा संस्थानों और सरकार को भी अपनी भूमिका को गंभीरता से निभाना होगा। शिक्षा संस्थानों को यह सुनिश्चित करना होगा कि उनके सभी शिक्षक और कर्मचारी कर्तव्यनिष्ठ और जिम्मेदार हों। उन्हें नियमित रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए और उनकी जिम्मेदारियों के प्रति उन्हें जागरूक किया जाना चाहिए। बेईमानों के विरुद्ध तत्काल विधिक कार्यवाही कर जेल का रास्ता दिखाना चाहिए।

सरकार को भी अपनी नीतियों और कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए। सरकार को न केवल सख्त कानून और नीतियाँ लागू करनी चाहिए, बल्कि शिक्षा संस्थानों को आवश्यक संसाधन और समर्थन भी प्रदान करना चाहिए, जिससे वे परीक्षा प्रक्रिया को सुरक्षित और पारदर्शी बना सकें। सरकार को अपने नेताओं, मंत्रियों को स्पष्ट निर्देश देना चाहिए कि नाजायज सिफारिश मात्र ही उन्हें उनके पद से हटाने का पर्याप्त आधार होगा। कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं होना चाहिए।

समाज के सभी हिस्सों को मिलकर इस दिशा में काम करना होगा, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ एक निष्पक्ष और पारदर्शी परीक्षा प्रणाली का अनुभव कर सकें। जब समाज के सभी हिस्से मिलकर काम करेंगे और अपने–अपने स्तर पर जिम्मेदारियों को निभाएंगे, तभी हम इस समस्या का स्थायी समाधान खोज सकते हैं।

कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों का नियंत्रण होना केवल एक नैतिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक समाजिक और राष्ट्रीय आवश्यकता भी है। यह न केवल छात्रों के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि समाज के संपूर्ण विकास और उन्नति के लिए भी आवश्यक है। जब कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति परीक्षा संचालन का जिम्मा संभालेंगे, तो दुनिया की कोई ताकत परीक्षा का पेपर लीक नहीं करा सकती।

इस दिशा में ठोस कदम उठाने से ही हम अपने शिक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता और गरिमा को पुनः स्थापित कर सकते हैं। परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए कर्तव्यनिष्ठ और जिम्मेदार व्यक्तियों का होना अनिवार्य है। यह सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए कि परीक्षा प्रक्रिया में किसी भी प्रकार की अनियमितता या भ्रष्टाचार की संभावना न हो।

यह केवल एक शिक्षा प्रणाली की बात नहीं, बल्कि पूरे समाज की बात है। जब हमारे समाज में सभी लोग अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान होंगे और अपने कार्यों को ईमानदारी से करेंगे, तभी हम एक निष्पक्ष और पारदर्शी परीक्षा प्रणाली की स्थापना कर सकेंगे। इस दिशा में समाज के सभी हिस्सों को मिलकर काम करना होगा। शिक्षा संस्थानों, सरकार, और समाज के सभी हिस्सों को मिलकर इस दिशा में ठोस कदम उठाने होंगे, ताकि हम अपनी शिक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता और पारदर्शिता को पुनः स्थापित कर सकें। यह एक लंबी और कठिन प्रक्रिया हो सकती है, लेकिन यह आवश्यक है। जब हम सभी मिलकर इस दिशा में काम करेंगे और अपने–अपने स्तर पर जिम्मेदारियों को निभाएंगे, तभी हम इस समस्या का स्थायी समाधान खोज सकते हैं।

पार्टी और सरकार कोई रही हो, पिछले 5 वर्षों में देश में लगभग 43 पेपर लीक कांड सामने आए हैं। यह युवाओं के भविष्य के लिए एक गंभीर चुनौती है। ऐसी घटनाएं न केवल शिक्षा और परीक्षा प्रणालियों की विश्वसनीयता को प्रभावित करती हैं, अपितु परीक्षार्थियों के मनोबल और उनके भविष्य के अवसरों पर भी गहरा दुष्प्रभाव डालती हैं। पेपर लीक कांडों की लगातार बढ़ती संख्या ने यह स्पष्ट कर दिया है कि हमारी शिक्षा और परीक्षा व्यवस्था में सुधार की तत्काल और गंभीर आवश्यकता है। इसके समाधान के लिए हमें कठोर कानूनों, तकनीकी सुरक्षा उपायों और पारदर्शिता को बढ़ावा देना होगा और साथ ही कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार व्यक्तियों को व्यवस्था में लाना होगा। इन सबके बिना देश के युवा अपने भविष्य के प्रति आश्वस्त नहीं हो पायेंगे और डेमोग्राफिक डिविडेंड का लाभ भारत को नहीं मिल पायेगा। बच्चों के भविष्य के साथ निरंतर खिलवाड़ जारी है। नेता और पार्टी कोई भी हों लेकिन यह देश अगर अपने बच्चों को परीक्षा का एक फूलप्रूफ सिस्टम भी नहीं दे पा रहा है तब तो गजब आश्चर्य है और गजब बेइज्जती है। बिल्कुल स्पष्ट है कि हमारे तमाम संस्थान जिन अयोग्य, अकर्मण्य और भ्रष्ट व्यक्तियों से भर गये हैं, उन्हें देशहित में चुन–चुन कर तत्काल निकाल बाहर करना आवश्यक है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

भक्तिकाल के सर्वश्रेष्ठ समाज सुधारक सर्वधर्म सुखाय के जनक संत कबीर

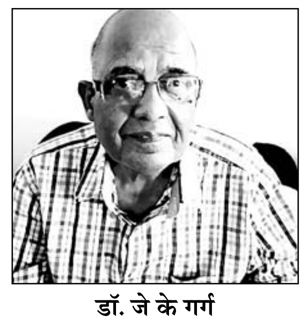

डॉ. जे के गर्ग

अनेकों मान्यताओं के अनुसार काशी के एक जुल्लाह नीरू अपनी बीबी नीमा का गोना कराकर लहरतारा तालाब से होते हुए घर आ रहे थे तो उसकी बीबी नीमा को प्यास लगने लगी तब दोनों तालाब पर पानी पीने लगे, तब उन्होंने एक टोकरी में फूल–पत्ते की शय्या पर एक नवजात शिशु को देखा। नीरू–नीमा उस शिशु को उठाकर अपने घर ले आये और उसका लालन–पालन करने लग गये। वहीं बालक कबीर के नाम से प्रख्यात हुआ। इस प्रकार कबीर साहेब का जन्म–स्थान काशी है। कुछ लोगों का विचार है कि नीरू–नीमा को अपने गौना के समय नहीं, किन्तु उसके कई वर्षों के बाद लहरतारा पर बालक को देखा था। सवाल उत्पन्न होता है कि शिशु लहरतारा तालाब पर कहां से आया? इस बारे में मान्यता है कि एक विधवा या कुमारी ब्राह्मणी की कोख से यह शिशु पैदा हुआ था वो समाज से अपमानित होने के भय से नवजात बालक को लहरतारा तालाब पर छोड़ गयी थी। इस तरह से कबीर जन्म से हिन्दू थे किन्तु उनका लालन–पालन मुस्लिम परिवार में हुआ था। बालक कबीर की शादी बचपन में ही कर दी थी। कबीर दास जी की पत्नी का नाम लोई था। कबीर दास जी के पुत्र का नाम कमाल था और पुत्री का नाम कमाली था, यह उनकी रचनाओं द्वारा प्रमाणित होता है। मान्यताओं के अनुसार सद्गुरु कबीर का जन्म विक्रमी संवत 1456 की ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को काशी में हुआ था। कबीर पंच तत्वों में विलीन माघ शुक्ल एकादशी संवत् 1575 को मगहर में हुए थे। कबीर साहेब ने 120 वर्ष तक सांप्रदायिक सद्भाव का संदेश दिया था। समस्त देश के अंदर 22 जून 2024 को संत कब्बर का जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा।

कबीर दासजी काशी के गंगा घाट के किनारे रहा करते थे। ऐसा कहा जाता है कि कबीर दास जी गंगा घाट के किनारे बैठे हुए थे तभी वहां पर गुरु रामानंदजी स्नान कर रहे थे रामानंद की नजर कबीर दास पर पड़ी जिसके कारण कबीर के मुंह से राम शब्द निकल पड़ा, इसी राम शब्द को सुनकर गुरु रामानंद अत्यधिक प्रसन्न हुए, तभी से रामानंद ने कबीर दासजी को अपना शिष्य बना लिया। उन्हें शिक्षा दी। इस प्रकार कबीर दास जी के गुरु श्री रामानंद जी थे। संत कबीर की साखियाँ में ज्यादातर कबीर दास जी की शिक्षाओं का उल्लेख मिलता है और उसके सिद्धांतों का वर्णन इस रचना में बखूबी से किया गया है। कबीर दास जी ने अपना सारा जीवन काशी में रहकर ही लोगों के कल्याण के लिए और सामाजिक बुराइयों और कुरीतियों का अंत करने के लिए लगा दिया मृत्यु के समय कबीर दास जी मगहर चले गए जो कि उत्तर प्रदेश में पड़ता है। ऐसा कहा जाता है कि उस समय मगहर में रहने वाले लोगों को नर्क की प्राप्ति होती थी, कबीर दास जी ने इसी अंधविश्वास को झूठा साबित करने के लिए मगहर चले गए। ताकि समाज में फैली हुई अंधविश्वास को जड़ से रोका जा सके।

कबीर की निष्पक्षता, दो टूक कहने का ढंग और बड़े–बड़े रहस्यात्मक गुत्थियों को सरल–सहज उपमाओं के द्वारा व्यक्त करने की शैली की वजह कबीर को भक्ति काल के संतों में प्रमुख संत माना गया है। कबीर मानत थे कि मेरे पास अपना कुछ भी नहीं है। मेरा यश, मेरी धन–संपत्ति, मेरी शारीरिक–मानसिक शक्ति, सब कुछ तुम्हारी ही है। जब मेरा कुछ भी नहीं है तो उसके प्रति ममता कैसी? तेरी दी हुई वस्तुओं को तुम्हें समर्पित करते हुए मेरी क्या हानि है? इसमें मेरा अपना लगता ही क्या है?

कबीर ने बतलाया कि यह तुम्हारी मूर्खता है कि तुम पहले जाति पूछते हो, फिर उसके हाथ का पानी पीते हो। तुम जिस मिट्टी के घर में बैठे हो उसमें सारी सृष्टि समाई हुई है। छप्पन करोड़ यादव और अठासी हज़ार मुनि यहाँ डूब गए और क़दम–क़दम पर गड़े हुए पैग़म्बरों की लाशें सड़कर मिट्टी हो गई है। कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते हैं। शाश्वत सत्य की बातें कहते हुए भी किसी परंपरा से जुड़े रहकर किसी धर्मग्रंथ, ईश्वर–अवतार, पैगंबर आदि की बैसाखी पकड़े रहे, वहाँ कबीर सारी परंपराओं से हटकर सबके सार–तत्व को स्वीकार करते हुए पक्षपात नहि बचन, सबहिं के हित की बातें कहते रहे, वह भी सरे बाजार चौराहे पर खड़े होकर एक अकेला और निद्वर्न्द्व। उनकी सत्यनिष्ठा एवं निष्पक्ष ने उनके व्यक्तित्व को ऐसा महनीय मोहक और चुम्बकीय बना दिया था कि जो उनके पास गया, उनका ही होकर रह गया। कबीर देव ऐसे महत्तम संत हैं जो केवल भारतीय परंपरा ही नहीं, अपितु विश्व मानवता के मूल उत्स को पकड़ते हैं और सबको वहीं ले जाना चाहते हैं, जहाँ पहुँचकर वर्ण, वर्ग एवं मत–पंथी गीत सारे भेदभाव निस्सार हो जाते हैं और जहाँ से प्रेम की निर्मल, स्निग्ध और शीतल धारा प्रवाहित होकर सबको सराबोर कर देती है।

पूरी मानवता को आत्मसात करने वाली प्रेम की निर्मल धारा में निमज्जित होकर सत्यनिष्ठ कबीरदेव ऐसे चौराहे पर खड़े हैं, जहाँ सारे रास्ते आकर मिलते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि कबीर में पूरी मानवता का सार समाया हुआ है। कुछ विद्वान कबीर साहेब को आजीवन गृहस्थ बताते हैं और कुछ बताते हैं कि वे पहले गृहस्थ थे किन्तु पीछे से विरक्त हो गये थे।

–डॉ. जे के गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक, कॉलेज शिक्षा जयपुर

नालंदा विश्वविद्यालय के पुनरुत्थान के मायने

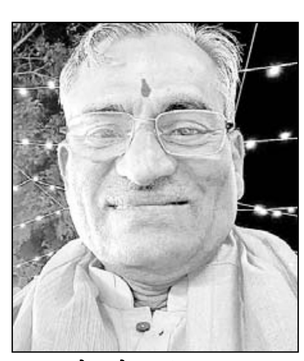

प्रो. महेश चंद गुप्ता

सदियों पहले समूचे विश्व के लिए ज्ञान का सागर बने जिस नालंदा को आक्रांताओं ने तहस–नहस कर दिया था, उसका पुनरुत्थान एक बहुत बड़ा और युगांतकारी कदम है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बिहार के राजगीर में नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन किया है। इसी के साथ सदियों के बाद नालंदा विश्वविद्यालय पूरे विश्व में ज्ञान के प्रसार के लिए उठ खड़ा हुआ है। 455 एकड़ में 1749 करोड़ की लागत से बना नालंदा का नया परिसर केवल कंकरीट की एक इमारत भर नहीं है, बल्कि इस इमारत के निर्माण से हमारे देश का गौरवशाली इतिहास पुनर्जीवित हुआ है। यह भारत को विश्व गुरु बनाने के लक्ष्य की ओर बढ़ा एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसके जरिए समूची दुनिया में ज्ञान की अलख जगाने के साथ–साथ एक नया इतिहास रचा जाना तय हो गया है। तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के महज दस दिन बाद मोदी नालंदा विश्वविद्यालय के कार्यक्रम में गए हैं। मोदी का नालंदा जाना अनायास नहीं है बल्कि यह उनका पूरे सोच–विचार, विमर्श और चिंतन के बाद लिया गया निर्णय है। अब यह बात किसी से छिपी नहीं है कि मोदी जो भी निर्णय करते हैं, उसमें कोई न कोई बड़ा उद्देश्य निहित होता है। मोदी नालंदा के बहाने देश को आगे बढ़ने का संदेश दे रहे हैं। सदियों पहले समूचे विश्व के लिए ज्ञान का सागर बने जिस नालंदा को आक्रांताओं ने जलाकर खाक और तहस–नहस कर दिया था, उसका पुनरुर्त्थान एक बहुत बड़ा और युगांतकारी कदम है। श्रीराम मंदिर की स्थापना के उपरांत नालंदा हमारे राष्ट्र के पुनरुत्थान का एक और उदाहरण बना है। कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

नालंदा में मोदी ने कहा भी है कि "मैं नालंदा को भारत की विकास यात्रा के लिए एक शुभ संकेत के रूप में देखता हूं। नालंदा केवल नाम नहीं है। नालंदा एक पहचान है, एक सम्मान है। नालंदा एक मूल्य है, नालंदा मंत्र है, गौरव है, गाथा है। नालंदा है उद्घोष इस सत्य का कि आग की लपटों में पुस्तकें भले जल जाएं लेकिन आग की लपटें ज्ञान को नहीं मिटा सकतीं। नालंदा के ध्वंस ने भारत को अंधकार से भर दिया था। अब इसकी पुनर्स्थापना भारत के स्वर्णिम युग की शुरुआत करने जा रही है।" मोदी ने सच ही कहा है क्योंकि आक्रांताओं ने नालंदा के वैभव को तीन बार नष्ट किया। दो बार इसका पुनर्निर्माण किया गया। प्राचीन मगध साम्राज्य (आधुनिक बिहार) में 5वीं शताब्दी ई. में स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय का नाम समूची दुनिया में था। इसमें दुनिया भर के दस हजार विद्यार्थी पढ़ते थे। नालंदा में चिकित्सा, आयुर्वेद, बौद्ध धर्म, गणित, व्याकरण, खगोल विज्ञान और भारतीय दर्शन जैसे विषय पढ़ाए जाते थे। भारतीय गणित के प्रणेता और शून्य के आविष्कारक आर्यभट्ट छठी शताब्दी ईस्वी के दौरान नालंदा के प्रतिष्ठित शिक्षकों में से एक रहे। इतिहासकारों के अनुसार सदियों पहले नालंदा में दाखिला आसान नहीं था। यहां प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थियों को कठिन साक्षात्कार प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था।

प्रधानमंत्री मोदी ने विश्वास व्यक्त किया है कि नालंदा वैश्विक हित का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनेगा। मोदी का मिशन है कि भारत, दुनिया के लिए शिक्षा और ज्ञान का केंद्र बने और फिर से विश्व के समक्ष सर्वप्रमुख ज्ञान केंद्र के रूप में पहचाना जाए लेकिन यह मिशन कैसे पूरा होगा, इस पर विचार किए जाने की जरूरत है। नालंदा विश्वविद्यालय भारत की शैक्षिणक विरासत और जीवंत सांस्कृतिक आदान–प्रदान का प्रतीक है। नालंदा का फिर से उठ खड़ा होना निश्चय की खुशी का मौका है। यह हमारे शैक्षिक उत्थान की प्रेरणा बनेगा मगर नालंदा की प्रेरणा तभी काम आएगी, जब हम शैक्षिक उत्थान के लिए समर्पित भाव से काम करेंगे। शैक्षिक उत्थान ही विकसित भारत की संकल्पना को साकार कर सकता है।

मैं चार दशक से ज्यादा समय दिल्ली यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रहा हूं। एक शिक्षक के रूप में लंबे अनुभव की बदौलत मेरी यह मान्यता है कि शिक्षा और विकास एक–दूसरे के पूरक हैं। शिक्षा की सीढ़ी पर चढक़र ही विकास की प्रत्येक मंजिल पर पहुंचा जा सकता है। अगर हम आजादी के सौ साल पूरे होने के अवसर पर वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित देश के रूप में देखना चाहते हैं तो यह शिक्षा की बदौलत ही संभव है लेकिन यह इतना सरल और सहज नहीं है। इसके लिए देश के विश्वविद्यालयों के लिए जमकर काम करना होगा। सरकारी विश्वविद्यालयों को ऊर्जावान बनाना होगा। सभी राज्यों को अपने–अपने विश्वविद्यालयों का ढांचा मजबूत करने के लिए होड़ लगानी पड़ेगी। अभी देश में प्राथमिक शिक्षा से लेकर स्नातकोत्तर तक शिक्षा और सरकारी विश्वविद्यालयों की जो हालत है, वह बेहद चिंताजनक है।

आजादी के बाद सत्तर सालों में शिक्षा को नजरअंदाज ही किया गया है। बजट में शिक्षा के लिए पर्याप्त प्रावधान नहीं किए गए। इसी कारण हमारे सरकारी विश्वविद्यालय और अन्य उच्चतर संस्थान पिछड़ गए। हमारे देश में प्राइवेट विश्वविद्यालय निरंतर विस्तार कर रहे हैं, पैसा कमा रहे हैं लेकिन इसके विपरीत यूजीसी की फंडिंग वाले विश्वविद्यालय पिछड़ रहे हैं। हमारे ज्यादातर विश्वविद्यालयों का बुनियादी ढांचा मजबूत नहीं है। उनमें विश्व स्तरीय स्मार्ट क्लास रूम का अभाव है। अच्छे ऑडिटोरियम, लाइब्रेरी, एकेडमिक ब्लॉक्स और बेहतरीन लैब की कमी खलती है। जो भारत प्राचीन काल में समूचे विश्व में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था, जिस भारत में उच्च शिक्षा के दुनिया के पहले विश्वविद्यालयों में शामिल सर्वाधिक महत्वपूर्ण और विख्यात नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, उस भारत में विश्वविद्यालयों की मौजूदा स्थिति विचारणीय है। इस वजह से देश में उच्च शिक्षा गुणवत्ता के लिहाज से पिछड़ रही है। धनवान लोगों के बच्चे तो उच्च शिक्षा के लिए विदेश चले जाते हैं और वहीं कॅरियर बनाकर बस भी जाते हैं। आम लोगों के बच्चे प्राइवेट विश्वविद्यालयों में शोषण झेल रहे हैं। यूजीसी फंडिंग वाले विश्वविद्यालयों की स्थिति सुधारी जाए तो हालात बदले जा सकते हैं। ऐसा तभी संभव है, जब हम हमारे विश्वविद्यालयों को वर्ल्ड रैंकिंग में लाएंगे। उन्हें बड़ा ब्रांड बनाने की दिशा में काम करेंगे। हालांकि मोदी सरकार ने शैक्षिक उत्थान के प्रयास शुरू किए हैं। नई शिक्षा नीति इसका प्रमाण है। मोदी मानते हैं कि "जब शिक्षा का विकास होता है तो अर्थव्यवस्था और संस्कृति की जड़ें भी मजबूत होती हैं। हम विकसित देशों को देखें तो पाएंगे कि वे अर्थ, सांस्कृतिक लीडर तब बने, जब वह एजुकेशनल लीडर हुए। आज दुनिया भर के छात्र उन देशों में जाकर पढऩा चाहते हैं। कभी ऐसी स्थिति हमारे यहां नालंदा और विक्रमशिला जैसे संस्थानों में हुआ करती थी।"

मोदी के पास विजन है, वह व्यापक काम कर रहे हैं और देश का गौरव लौटा रहे हैं। अभी हम जिस कालखंड में जी रहे हैं, वह भारत के लिए क्रांतिकारी, गौरवशाली और बड़े सकारात्मक बदलावों का कालखंड है। पूरी दुनिया हमारी संस्कृति को मान रही है। भारत की गौरवशाली और प्राचीन संस्कृति की तरफ लोगों का रूझान है। पाश्चात्य संस्कृति की ओर खिंचे रहने वाले युवा भी हमारी संस्कृति को पुनः अंगीकार कर रहे हैं। मोदी का सपना भारत को विश्व गुरु बनाने का है। यह सपना शिक्षा की बदौलत सच हो सकता है। आज नालंदा फिर से उठ खड़ा हुआ है। इसी तर्ज पर आगे चलकर समूचे देश के विश्वविद्यालयों को प्रगति पथ पर बढ़ाया जाए। यह काम केवल सरकार या संबंधित विश्वविद्यालय प्रशासन के जिम्मे छोडऩे से नहीं होगा। इसके लिए सबको मिलकर काम करना होगा।

(लेखक प्रख्यात शिक्षा विद्, चिंतक और वक्ता हैं। वह 44 सालों तक दिल्ली यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर रहे हैं।)
-प्रो. महेश चंद गुप्ता

कबीर से ज्यादा साधारण आदमी खोजना कठिन : मुकेश राजस्थानी

बीकानेर, (निसं)। कबीर अनूठे हैं। प्रत्येक के लिए उनके द्वारा आशा का द्वार खुलता है। कबीर से ज्यादा साधारण आदमी खोजना कठिन हैं और अगर कबीर ईश्वर तक पहुंच सकते हैं तो सभी पहुंच सकते हैं। कबीर हर वक्त राम की धुन करते रहते। यह विचार मगनमणि पीठाधीश्वरवारी व संगम संस्थान के केन्द्रीय अध्यक्ष मुकेश राजस्थानी ने कबीर साहेब के 627 वें प्राकट्य दिवस पर व्यक्त किए। राजस्थानी ने कहा कि सद्गुरु कबीर की वाणी आज भी मार्ग दिखाती है। वह सत्य, प्रेम, करूणा के साक्षात स्वरूप महान् युगदृष्टा सद्गुरु हैं। सोच ही कहत और सोच की गहत हो उनका सीधा, सच्चा स्पष्ट मार्ग है।

■ कबीर साहेब का 627 वां प्राकट्य दिवस मनाया

मगनमणि कबीर संगम संस्थान द्वारा कबीर प्राकट्य दिवस पर संतजनों द्वारा गुरुवाणी के पांच बदावा की प्रस्तुति से कबीर को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उनका श्रद्धामय स्मरण करने वालों में सदाचारी महाराज, संत हरिप्रकाश वाल्मीकि हरजी महाराज, राकेश वाल्मीकि, दिलीप पांडे, अनिल पंडित, रविकांत वाल्मीकि, अजय महाराज, कालू महाराज जावा, छोटू महाराज चांवरिया, गोपाल महाराज, राकेश सियोता, अन्नूप जावा, कुणाल चंदेलिया, अभिषेक वाल्मीकि, राहुल सारवान, अमन पंडित, राजा पंडित, योगेश वाल्मीकि, राहुल सियोता, गोपाल कुंज महाराज आदि थे। कार्यक्रम का संचालन मगनमणि कबीर संगम संस्थान के महामंत्री अभिषेक वाल्मीकि ने किया।

राशिफल रविवार 23 जून, 2024

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र सांय 5:04 तक, ब्रह्म योग दिन 2:26 तक, तैतिल करण सांय 4:20 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 10:48 से मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–धनु, मंगल–मेष, बुध–मिथुन, गुरू–वृष, शुक्र–मिथुन, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से सांय 5:04 तक है। त्रिपुष्कर योग सांय 5:04 से रात्रि 3:26 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग सांय 5:04 से सूर्योदय तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:10 से 9:03 तक, लाभ–अमृत 9:03 से 12:29 तक, शुभ 2:11 से 3:54 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:19

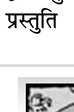

मेष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

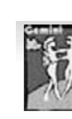

मिथुन

परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क

अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। वर्तमान में चल रही परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

सिंह

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। पारिवारिक कार्यों के लिए बाहर जा सकते हैं।

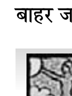

कन्या

परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नये–पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

तुला

महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृश्चिक

घर–परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

धनु

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

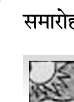

मकर

आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

कुंभ

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। घर–परिवार में शुभ–धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।